AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विष्णुगढ़ प्रखण्ड में मानव के आर्थिक क्रियाकलाप –एक भौगोलिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. ओम प्रकाश महतो
निदेशक
पूर्व विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

कुमारी श्रेया लक्ष्मी
शोधार्थी
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में हजारीबाग जिले के अंर्तगत विष्णुगढ़ प्रखंड के आर्थिक क्रियाकलाप को शामिल किया गया है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में मानवीय क्रियाकलाप के स्वरूप को जानना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का सहारा लिया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के अंर्तगत अवलोकन और साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के अंर्तगत सरकारी और गैर–सरकारी विधि का प्रयोग किया गया है। इस पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक क्रिया, द्वितीयक क्रिया, तृतीयक क्रिया एवं चतुर्थक क्रिया देखने को मिलता है जिसमें मूलतः कृषि कार्य, कुटीर उद्योग, सोहराय पेंटिंग, निर्माण कार्य, क्लाउड किचन, मजदूरी शामिल है। अध्ययन क्षेत्र में कृषक वर्ग 48.10 प्रतिशत, कृषि श्रमिक 30.57 प्रतिशत, गृहस्थी उद्योग में 3.01 प्रतिशत एवं अन्य श्रमिक 18.32 प्रतिशत जनसंख्या शामिल है। अध्ययन क्षेत्र के इन आर्थिक क्रियाकलाप को प्राकृतिक संसाधन, मानव संसाधन विकास, पूंजी निर्माण, तकनीकी उन्नति, जनसंख्या में वृद्धि, सामाजिक लागतें, मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक कारक और कृषि का मशीनीकरण शामिल है।

मुख्य शब्द

कृषि कार्य, कुटीर उद्योग, सोहराय पेंटिंग, निर्माण कार्य, मजदूरी, सेवा कार्य.

प्रस्तावना

वह क्रिया या कार्य जो लोगों को आजीविका का साधन अर्जित करवाता है वह क्रिया आर्थिक क्रियाकलाप कहलाता हैं, अर्थात् वह क्रिया जिसमें कोई व्यक्ति अपनी जीविका अर्जित करता है उसे आर्थिक क्रिया या व्यवसाय कहते हैं। मानव की सभी आर्थिक क्रियाएँ व्यवसाय के अंर्तगत समाहित होती है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं का एक एकत्रण, आखेट, पशुचारण, मछली पालन, लकड़ी काटना, वनोद्योग, कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं संचार सेवाएँ आदि प्रमुख मानव व्यवसाय हैं। इस प्रकार व्यवसाय व्यक्ति के आर्थिक आय का स्थायी स्रोत माना जाता है। व्यवसाय के माध्यम से ही व्यक्ति के सामाजिक स्थिति का निर्धारण होता है।

वास्तव में आर्थिक क्रिया के अंर्तगत उन क्रियाओ को शामिल करते हैं जो मनुष्य के धन के उत्पादन, विनिमय,

वितरण, उपयोग से संबंध रखती है इसे आर्थिक क्रिया कहते हैं। आर्थिक क्रिया का मूल तात्पर्य उस क्रिया से है जिसमें मनुष्य अपनी व्यवहारिक आवश्यकता के पूर्ति हेतु अर्थ के माध्यम से व्यवहार करता है, अर्थात् यह कह सकते हैं कि संसाधनों के उपभोग द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना ही आर्थिक क्रिया है।

अन्य शब्दों में यह कहा जाए तो आर्थिक क्रिया वह क्रिया है जो अर्थ या धन के विनिमय का कारण बनती है। आर्थिक क्रिया का अर्थ केवल धन का उपार्जन करना ही नहीं, बल्कि व्यय द्वारा किसी वस्तु को खरीद कर या सेवा को लेकर उसका उपभोग करना ही आर्थिक क्रिया है।

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही मानव ने अनेक कार्यों को करना प्रारंभ किया था। लगभग 4000 ई. पूर्व जो आदिकाल के प्रथम चरण जिसे पाषाण काल कहा जाता है, उस समय मानव ने पत्थरों के औजार का प्रयोग करते हुए अपने कार्यों को प्रारंभ किया था। इस पाषाण काल के पश्चात् प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल आये। यह क्रमिक रूप से हुआ, जिससे मानव व्यवसाय में भी परिवर्तन होता गया। लगभग 1200 ई. पूर्व से लौह युग का प्रारंभ माना जाता है जिसमें लौह धातु की खोज हुई थी। भारत में भी लगभग 1000 ई. पूर्व के आसपास लौह युग का प्रारंभ माना जाता था। इस युग में कृषि विकास के साथ अन्य व्यवसायों का भी विकास हुआ। कृषि के विस्तार और कृषि के तरीकों में सुधार से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई और कृषि उपजों का गैर कृषि वस्तुओं के साथ विनिमय होने लगा। इस प्रकार व्यापार के विकास ने नगरों के उद्‌भव और विकास को प्रोत्साहित किया।

19वीं शताब्दी में वाष्प चालित रेल इंजन के आविष्कार तथा बाद में उसमें सुधार तथा डीजल और विद्युत से चलने वाली इंजनों के प्रयोग से रेल, परिवहन का भी विकास हुआ। परिवहन सुविधाओं के विकास के साथ व्यापार, मनोरंजन, प्रसाधन, सैन्यकार्य में अधिक सुविधाएँ प्राप्त हुई। वे समस्त आर्थिक क्रिया जिसमें मनुष्य को आय की प्राप्ति होती है उसे व्यवसाय के अंर्तगत शामिल करते हैं। समस्त आर्थिक क्रिया को उसकी विशेषता के आधार पर निम्न भागों में बाँटते हैं:

(1) **प्राथमिक क्रिया:** इसके अंर्तगत उन क्रियाओं को शामिल करते हैं जिनके द्वारा प्रकृति या भूमि से प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन प्राप्त करते हैं। इसमें आखेट, पशुचारण, खनन कार्य, लकड़ी काटना, पशुपालन आदि को शामिल करते हैं।

(2) **द्वितीयक क्रिया:** इस क्रिया में प्राथमिक क्रिया से प्राप्त वस्तुओं का रूप बदलकर नवीन वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इसमें लघु और कुटीर उद्योग, विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य आदि को शामिल करते हैं।

(3) **ततीयक क्रिया:** इसके अंर्तगत प्रत्यक्ष रूप से वस्तु का उत्पादन नहीं होता है, किंतु परोक्ष रूप से वस्तु उत्पादन में सहयोग करते हैं। इसमें परिवहन, शिक्षा, संचार, वाणिज्य, व्यापार, चिकित्सा, मनोरंजन, प्रतिरक्षा को शामिल करते हैं।

(4) **चतुर्थक क्रिया:** इसमें वर्तमान काल में विज्ञान, कला, साहित्य, अनुसंधान एवं उच्च सेवाओं को शामिल करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

विष्णुगढ़ प्रखण्ड हजारीबाग जिले के अंर्तगत आता है। उच्चातय की दृष्टि से विष्णुगढ़ प्रखंड में काफी विषमता देखने को मिलती है। सम्पूर्ण विष्णुगढ़ प्रखण्ड के मानचित्र पर दृष्टि डाली जाए तो कहीं पर काफी ऊँचे स्थलाकृति है तो कहीं पर निम्न स्थलाकृति है। अतः समस्त प्रखंड उबड़–खाबड़ है, कहीं भी समतल नहीं है। इस प्रखंड की ऊँचाई समुद्र तल से 600–800 फीट है। इस प्रखंड का भौगोलिक विस्तार $23^0$50′ उत्तरी अक्षांश से लेकर $24^0$7′ उत्तरी अक्षांश एवं $85^0$35′ पूर्वी देशातंर से लेकर $85^0$55′ पूर्वी देशातंर के बीच स्थित है। यह प्रखंड हजारीबाग के मुख्यालय से 40 कि.मी. की दूरी पर पूर्व में स्थित है। इसी प्रखंड के मध्य के NH-512 गुजरती है। इसका कुल क्षेत्रफल 51954.55 हेक्टेयर है जो जिला के कुल क्षेत्रफल का 12 प्रतिशत है। इसकी कुल जनसंख्या 182917 है। इस प्रखंड में 28 पंचायत एवं 139 गांवों की संख्या है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के लिए व्यवहारिक उद्देश्य यह है कि अध्ययन क्षेत्र में मानवीय क्रियाकलाप के स्वरूप को जानना है।

विधि तंत्र

विधि तंत्र के माध्यम से किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक और सटीक बनाया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया है। प्राथमिक आंकड़ों में अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि, जबकि द्वितीयक आंकड़ों में सरकारी एव गैर सरकारी विभागों से प्राप्त आंकड़ों को शामिल किया गया है।

विष्णुगढ़ प्रखंड में आर्थिक क्रियाकलाप को प्रभावित करने वाले कारक

विष्णुगढ़ प्रखंड हजारीबाग जिला का एक अति पिछड़ा प्रखंड है। इस प्रखंड के अंर्तगत टाटीझरिया, डहरभंगा, धरमपुर, डुमर, भेलवारा, खरना, गैड़ा, बेड़ा हरियारा, गोविंदपुर, कुसुंभा, चेडरा, विष्णुगढ़, अलपिटो, बराय, नवादा, बकसपुरा, बनासो, चानो, नागी, सारूकुदर, अचलजामो, करगालो, सिरय, मड़मो, जोबर, गाल्होबार, खरकीखास और नरकी पंचायत शामिल है।

अध्ययन क्षेत्र में मानव के आर्थिक क्रियाकलाप को निर्धारित करने वाले कारक निम्न है:

(1) प्राकृतिक संसाधन,
(2) मानव संसाधन विकास,
(3) पूंजी निर्माण,
(4) तकनीकी उन्नति,
(5) जनसंख्या में वृद्धि,
(6) सामाजिक लागतें,
(7) मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक कारक,
(8) कृषि का मशीनीकरण।

यह सभी कारक मानव के आर्थिक क्रियाकलाप को प्रभावित करती है। विष्णुगढ़ जैसे छोटे प्रखंड में आर्थिक क्रियाकलाप के अभाव के कारण ही प्रवास जैसी समस्या देखने को मिलती है। यहाँ ना तो कृषि का व्यापक विकास हुआ है और ना ही कृषि में मशीनीकरण देखने को मिलता है। यहाँ मानव विकास का आधार साक्षरता है। यदि स्पष्ट रूप से देखें तो अध्ययन क्षेत्र में मानव के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण सामाजिक अव्यवस्था है। सामाजिक अवस्था में रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, धर्म, जाति, भाषा एवं संस्कार शामिल हैं। हजारीबाग जिला के अंर्तगत विष्णुगढ़ प्रखंड इन्हीं सामाजिक अव्यवस्थाओं से घिरा हुआ है। यहां बेरोजगारी चरम पर है, जिसके कारण अधिकांशतः जनसंख्या प्रवास करने के लिए बाध्य है। यहां पूंजी निर्माण, तकनीकी उन्नति और कृषि मशीनीकरण का अभाव पाया जाता है।

विवेचना (विष्णुगढ़ प्रखंड में मानव के प्रमुख आर्थिक क्रियाकलाप)

विष्णुगढ़ प्रखंड में हजारीबाग पठार के पूर्व की ओर NH-512 के किनारे स्थित एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विष्णुगढ़ प्रखंड के आर्थिक संसाधन के अंर्तगत कृषि का अपना विशेष स्थान है। यह प्रखंड छोटानागपुर पठार का अभिन्न हिस्सा होने के कारण एक महत्वपूर्ण कृषि प्रदेश है। अध्ययन क्षेत्र में जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दशाओं मे काफी विभिन्नता देखने को मिलती है जो यहाँ की उत्पादन, सूचकांक, आपूर्ति, मांग बाजार, आधारभूत संसाधनों का विकास, लागत अवस्थाएं एवं कृषि भूमि नीति इत्यादि को उजागर करता है। (रामानुज अरुण कुमार, पेज नं० 55)

अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक दशा के अनुसार लोग अनेक कार्यों में अर्थात् अनेक प्राथमिक और द्वितीय और अन्य क्रियाकलापों में संलग्न हैं।

(1) **कृषि कार्यः** इस प्रखंड में शुद्ध बोये गए भूमि लगभग 12146.46 एकड़ है जिसमें भदई, अगहनी, रबी तथा गरमा फसलों का उत्पादन किया जाता है। यहाँ के कृषि भूमि में कुछ ऐसे भाग भी हैं जहाँ फसल संयोजन और फसल विविधीकरण का स्वरूप भी देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के अंर्तगत धान, मकई, चना, अरहर, गेहूँ, हरी सब्जियाँ उगाई जाती है।

पंचायत	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (एकड़ में)	भदई		अगहनी		रबी		एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र	योग
		सिंचित	असिंचित	सिंचित	असिंचित	सिंचित	असिंचित		
टाटीझरिया	205.37	–	49.76	33.23	96.07	38.75	13.35	10.39	241.55
डहरभंगा	225.15	–	45.08	50.53	86.47	46.05	8.6	7.32	244.05
धरमपुर	68.61	–	70.75	65.43	180.97	105.78	–	354.84	777.79
डुमर	202.49	–	50.05	51.65	168.32	57.4	0.25	122.05	449.72
भेलवारा	137.85	–	36.45	28.65	64.55	19.75	1.35	12.95	163.70
खरना	255.60	–	79.85	33.50	28.65	64.55	19.75	841.44	1938.48
गैड़ा	154.04	–	57.42	27.66	467.24	24.1	15.45	437.83	1007.70
बेड़ा हरियारा	787.74	–	104.15	72.10	700.10	18.21	1.33	121.04	1024.98
गोविंदपुर	114.96	–	16.70	15.41	43.97	46.43	0.35	8.5	131.36
कुसुंभा	174.79	–	40.86	24.71	67.10	32.83	0.95	11.57	178.02
चेडरा	190.47	–	14.90	13.85	178.85	7.05	2.19	42.03	265.73
विष्णुगढ़,	626.36	–	51.15	30.03	566.70	21.31	0.46	83.43	764.2269.97
अलपिटो	229.13	–	50.58	25.00	129.20	14.88	17.96	1.45	69.97
बराय	67.07	–	10.35	9.50	23.85	13.36	11.46	–	177.13
नवादा	173.80	–	45.33	17.36	91.15	22.65	0.67	–	770.61

बकसपुरा	473.34	–	70.80	84.44	374.58	17.92	0.43	11.19	474.99
बनासो	225.78	–	47.76	20.55	161.48	19.42	–	–	69.97
चानो	298.90	–	25.40	41.80	266.80	7.61	1.05	1.38	459.08
नागी	403.59	–	93.71	40.85	249.99	36.54	3.67	1.39	473.32
सारूकुदर	438.56	–	48.60	43.10	342.97	15.19	4.71	1.12	473.32
अचलजामो	309.60	–	71.32	7.35	211.08	14.70	1.6	–	306.05
करगालो	309.60	–	71.32	7.35	211.08	14.70	1.66	–	306.05
सिरय	15.60	–	2.80	1.00	10.85	1.30	0.25	–	16.70
मड़मो	337.25	–	51.45	51.15	241.95	23.18	2.60	0.89	391.06
जोबर	657.50	–	66.18	98.70	495.46	40.09	2.53	4.03	760.98
गाल्होबार	153.13	–	48.34	25.20	4.20	9.62	1.42	21.15	109.93
खरकीखास	153.13	–	48.34	25.20	4.20	9.62	1.42	21.15	109.93
नरकी	276.39	–	118.65	14.24	104.00	41.60	10.59	15.20	306.28
कुल	7156.07	–	1368.39	929.01	6296.02	709.02	10489	2485.36	12146.44

(स्रोतः प्रखंड कार्यालय, विष्णुगढ़)

(2) **कुटीर उद्योगः** कुटीर उद्योग उन उद्योगों को कहा जाता है जिनमें वस्तुओं का निर्माण और सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है अर्थात् वे उद्योग जिनमें विनिर्माण, उत्पादन और सेवाओं के प्रतिपादन में छोटे पैमाने पर योगदान होता है। इसमें निवेश की सीमा अर्थात् लागत 5 करोड़ रूपये तक देखे जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में चमड़े का उत्पाद, ईट भट्टे का काम, कागज के थैले, बांस की टोकरियाँ, बढ़ई, लोहार, अगरबत्ती निर्माण आदि का कार्य शामिल होता है साथ ही गन्ने से गुड़ निर्माण, पापड़, अचार विभिन्न प्रकार के मसाले के निर्माण कार्य शामिल होते हैं। लघु स्तर के उद्योगों के लिए तथा लोगों के सीधे जुड़ाव के लिए गोविंदपुर गांव में झारखंड सरकार ग्रामीण विकास विभाग द्वारा प्लास मार्ट का उद्घाटन किया गया है। इसके माध्यम से अनेक गांव की महिलाओं के द्वारा निर्मित छोटे उद्योगों के सामान बिक्री किए जा रहे हैं।

(3) **सोहराय पेंटिंगः** सम्पूर्ण छोटानागपुर पठार अर्थात् झारखंड अपने कला और संस्कृति के लिए काफी प्रसिद्ध है। झारखंड में अनेक ट्राइबल पेंटिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है। विष्णुगढ़ प्रखंड में अधिकांशत जनसंख्या आदिवासी बहुल क्षेत्र है जहां दूद्धी मिट्टी से सजे घरों के दीवारों पर महिलाओं के हाथों के हुनर देखने को मिलते हैं, जो अपने घरों की दीवारों पर उकेरती हैं। यहां केवल विष्णुगढ़ प्रखंड में ही नहीं बल्कि संपूर्ण जिला में सोहराय पेंटिंग संरक्षित करने का बेड़ा उठाया गया है। यह पेंटिंग सोहराय पर्व की सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। आज के समय में अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश पंचायत एवं गांव में सोहराय पेंटिंग के माध्यम से लोगों का जीविकोपार्जन हो रहा है। हाल ही में अक्टूबर 2023 में हजारीबाग जिला के सदर प्रखंड में आयोजित स्वावलंबन मेला में सोहराय कला की अमिट छाप दिखाई दी। जिसमें विष्णुगढ़ प्रखंड के फूलमती देवी एवं रजनी देवी द्वारा सोहराय कल की आकृति ने लोगों को अपनी ओर रिझाया।

(4) **निर्माण कार्यः** अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान समय में जनसंख्या के विस्फोट से इसका सीधा असर कृषि भूमि पर देखने को मिलता है। कोरोना काल के उपरांत लोगों का अपने निवास स्थान की ओर आवागमन से बेरोजगारी में वृद्धि हुई और यही जनसंख्या अनेक प्रकार के निर्माण कार्य में संलग्न हो गई जैसे– सड़क निर्माण, मकान निर्माण आदि।

(5) **क्लाउड किचनः** इसका तात्पर्य है कि निश्चित समय के अंर्तगत लोगों द्वारा खान–पान हेतु असुविधा को समाप्त करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान खाना पहुँचाने का कार्य किया जाता है। जैसे – जोमैटो, स्विगी।

यह एक प्रकार का ऐसा रेस्टोरेंट है जहां सिर्फ टेक अवे ऑर्डर ही दिए जा सकते हैं मतलब यानी वहाँ खाना तो बनता है लेकिन वहां आप बैठकर खा नहीं सकते हैं। आमतौर पर इसे घर के किचन से या किसी प्रोफेशनल किचन भी कहा जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या में से मात्र 1 से 2 प्रतिशत लगभग व्यक्ति शामिल हैं जिसमें टाटीझरिया पंचायत, विष्णुगढ़ पंचायत और गोविंदपुर पंचायत शामिल है।

(6) **मजदूरीः** अध्ययन क्षेत्र में अनेकों जनसंख्या मजदूरी का कार्य करते हैं। निश्चित समय पर लोगों द्वारा कुछ काम करने के बदले काम कराने वाले व्यक्ति उसे कुछ श्रमदान देता है तो उसे मजदूरी कहते हैं। अध्ययन क्षेत्र के अंर्तगत पिछड़ी अवस्था के कारण अधिकांश जनसंख्या मजदूरी कार्य में संलग्न है। यह सभी पंचायत में देखने को मिलती है। इसे निम्न तालिका द्वारा समझ सकते हैंः

वर्ग	कुल जनसंख्या (प्रतिशत में)
कृषक वर्ग	48.10
कृषि श्रमिक	30.57
गृहस्थी उद्योग	03.01
अन्य श्रमिक	18.32

(Source:www.nregastrep.nic.in)

निष्कर्ष

उपरोक्त संपूर्ण विवरण से स्पष्ट होता है कि विष्णुगढ़ प्रखंड अत्यंत पिछड़ा प्रखंड है। यहाँ की भौगोलिक दशा लोगों को अपनी और अनेक आर्थिक कार्यों के आधार पर आकर्षित करती है लेकिन फिर भी लोग यहाँ की पिछड़ेपन के कारण अपने स्थान से प्रवास कर बाहर अन्य क्षेत्रों की ओर जाते हैं जिसमें – कोलकाता, दिल्ली, बनारस, मुंबई, बेंगलुरु इत्यादि में शामिल हो जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य, कुटीर उद्योग, सोहराय पेंटिंग, निर्माण कार्य, क्लाउड किचन, मजदूरी और अन्य कार्य में जनसंख्या शामिल है। इसमें कृषक वर्ग में 48.10 प्रतिशत, कृषक श्रमिक में 30.57 प्रतिशत, गृहस्थ उद्योग 3.01 प्रतिशत, अन्य श्रमिक 18.32 प्रतिशत जनसंख्या शामिल है। अतः यह स्पष्ट होता है कि विष्णुगढ़ प्रखंड में आर्थिक क्रियाकलाप मध्यम स्तर का है।

संदर्भ सूची

1. मौर्य, एस. डी. (2018), *''आर्थिक भूगोल''* प्रवालिका पब्लिकेशन्स, यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद, 211002.
2. ठाकुर, दीनानाथ और कुमारी सरिता (2018), *''कृषि भूगोल''* राजेश पब्लिकेशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002.
3. रामानुज, अरूण कुमार (2019), *''झारखण्ड में कृषि के बदलते स्वरूप''* राजेश पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली–110002.
4. मुखर्जी, आर. के. (1933), *''द चेजिंग फेश ऑफ बंगाल, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन,''* कोलकाता, पृष्ठ 239.

5. मुखर्जी, ए. बी. (1959), *स्पेशियल पैटर्न ऑफ मल्टीपल क्रापिंग इन इंडिया,* एस्सेज ऑफ एग्रीकल्चर ज्योग्राफी पृष्ठ 173.
6. जिला जनगणना पुस्तिका–2011।
7. www.nregastrep.nic.in, Assess on 24/01/2024
8. https://mnregaweb2.nic.in, Assess on 24/01/2024
9. www.census2011.co.in, Assess on 24/01/2024
10. https://hazaribag.nic.in, Assess on 24/01/2024
11. https://www.censusindia.co.in, Assess on 24/01/2024

––==00==––